एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

दायमी मोजिज़ा यानी हमेशा रहने वाला चमत्कार

वक़्ती चमत्कारों के अलावा हमारे पैग़म्बर (स0) को हमेशा बाक़ी रहने वाला चमत्कार भी दिया गया जिसका नाम ''क़ुर्आन'' है। यही हमारे पैग़म्बर (स0) और दूसरे पैग़म्बरों के बीच इम्तियाज़ और विशेषता है, कारण इसका यह है कि और पैग़म्बरों की शरीअतें यानी धर्मविधियाँ एक मुद्दत, अवधि विशेष के बाद समाप्त हो जाने वाली थीं और हमारे पैग़म्बर (स0) की शरीअत चूँकि क़यामत तक रहने वाली है इसलिए एक सदाबहार चमत्कार की भी ज़रूरत थी जो क़ुर्आन के रूप में सदाबहार चमत्कार की हैसियत से हमारे पैग़म्बर (स0) को दे दिया गया।

क़ुर्आन मजीद एक ही नही अनेक रूपों में चमत्कार है जिसमें से एक पहलू उसकी फ़साहत और बलाग़त है अर्थात् एक पक्ष उसका वाक् कौशल है। चूँकि चमत्कार में यह विशेषता दृष्टिगत रखी जाती है कि वह ऐसा हो जिसको उस ज़माने के लोग परख सकें अतएव जिस युग में जिस कला में लोग बहुत दक्ष या माहिर होते हैं, उसी से मिलता जुलता चमत्कार भी दिया जाता है जैसे हज़रत मूसा के ज़माने में जादू–टोने का बहुत ज़ोर था। इसलिये हज़रत मूसा को इससे मिलता जुलता चमत्कार दिया। हज़रत ईसा के ज़माने में तिबाबत (आयुर्विज्ञान) का दौर दौरा था इसलिए आपको इसके अनुरूप चमत्कार प्रदान हुआ। हमारे पैग़म्बर (स0) जिस युग में हुए उस वक़्त अरबों को किसी कला में भी कमाल हासिल नहीं था। उस युग को जिहालत का दौर, अज्ञान का युग कहा जाता था। बस वह अपनी वाक्पटुता पर वाग्मिता पर गर्व करते थे उन्हें अपनी भाषा ज्ञान पर इतना घमण्ड था कि दूसरों को गूँगा बताते थे, उनके गौरवशाली कवि जनसाधारण से मिलना पसन्द न करते थे कि कहीं ज़बान ख़राब न हो जाये इसलिये हज़रत (स0) को चमत्कार भी वाक्पटुता और वाग्मिता दिया गया। अगर क़ुर्आन इस दृष्टि से चमत्कार न होता तो निरन्तर ललकारने, अनेक आयतों में क़ुर्आन का जवाब लाने की माँग, पूरी किताब का न सही 10 सूरों का, 10 का भी न सही एक ही का जवाब लाने का बुलावा देने के बाद भी वह कभी चुप न रहते। यह उनकी ज़बाँदानी, (भाषा विद्वता) पर कितनी भरपूर चोट है, कैसी ज़बरदस्त चुनौती है, क्या अरब के वाग्मी तड़प के न रह गये होंगें

खुली बात है कि उनको अपना धर्म भी प्रिय था, बुत भी प्यारे थे, अपनी सभ्यता और समाज से भी मुहब्बत थी। इस्लाम उनकी पूरी ज़िन्दगी को उलटपलट के रख देना चाहता था जिसका उन्होनें हर तरह मुक़ाबला करना चाहा, उनके बचाने के लिये जान तक दे दी इसलिये अगर उनके बस में होता कि वह क़ुर्आन का जवाब लायें तो बद्र, ओहद, ख़न्दक़, ख़ैबर और हुनैन के *''ग़ज़वे''* और बहुत से *''सराया''* न

होते। एक ही ''सूरा'' ले आते तो नबी (स0) का दावा खण्डित हो जाता। अगरचे कुर्आन की फसाहत और बलाग़त का दर्जा समझना अन्य जातियों के लिये सम्भव नहीं परन्तु हर फन के माहिरों, हर कला में निपुण लोगों का किसी कला के बारे में कोई फैसला दूसरों के लिये हुज्जत (अकाट्य प्रमाण) हुआ करता है तो जिस तरह साहिरों का जनाब मूसा के असा (लाठी या सोंटा) के बारे में यह फैसला कि वह जादू नहीं चमत्कार है, दूसरों के लिये अकाट्य प्रमाण है। उसी तरह अरब के वाकपटु लोगों का मान लेना और ग़ैर अरब लोगों के लिये चमत्कार होने की दलील है, तर्क है।

कुर्आन के चमत्कार होने के दूसरे पहलू

कुर्आने मजीद सिर्फ वाक् कौशल के लिहाज़ से चमत्कार नहीं, चमत्कारिता के ऐसे पहलू भी पाये जाते हैं जिनके कारण ग़ैर अरब भी सर झुका दें। सर्वज्ञाता अल्लाह जानता था कि भूमण्डल पर बसने वाले इन्सान एक ज़माने में अपनी इल्मी तरक़्क़ियों, सक़ाफ़त में बढ़ते हुए क़दमों से फितरत की उलझी हुई गुत्थियों के सुलझाने और रोज़–रोज़ की तहक़ीक़ पर नाज़ करता होगा यानी अपने शास्त्रीय, प्रगति, संस्कृति के क्षेत्र में बढ़ते हुए चरण, नैसर्ग की उलझी हुई गुत्थियों के सुलझाने और नित्य दिन बढ़ रहे अनुसन्धान पर गर्व करेगा। इसलिए आवश्यकता थी कि अन्तिम पैग़म्बर (स0) को जो चमत्कार दिया जाए उसका शास्त्रीय पक्ष भी इतना ऊँचा हो कि विकसित जगत को भी आश्चर्य में डाल के कुर्आन की महानताओं के सामने सर झुकाने पर विवश कर दे। यह बात समझ लेना चाहिए कि चमत्कार का मतलब यह नहीं कि जो बात पैग़म्बर अपने दावे के सुबूत में पेश करे वह ऐसा हो जिसे कोई किसी प्रकार अंजाम न दे सकता हो बल्कि वह काम ऐसा होना चाहिए कि सामान्य कारणों से जिस तरह सामान्य रूप में नतीजे पाये हैं, उनसे वह अलग हो। उसके ऐसे अनोखे कारण हों जो इंसानी तरीक़ों से परे हरि इच्छा (इलाही इरादे) के पाबन्द हों। मिसाल के तौर पर अगर हज़रत इब्राहीम का चमत्कार बस यह होता कि आग में सुरक्षित रहें, हज़रत मूसा का चमत्कार बस यह होता कि नदी के पानी को रोक दिया, हज़रत सुलेमान का चमत्कार मात्र हवा पर बुलन्द होना और जनाब ईसा के पैग़म्बर होने का प्रमाण सफ़ेद दाग़ और कोढ़ के रोगियों को अच्छा करना होता तो आज अग्निसिंह (Fire proof) कपड़ों की ईजाद, नदियों पर बड़े–बड़े बाँध, हवा में उड़ते हुए जहाज़, सफेद दाग़ और कोढ़ की दवाएँ, कुछ मुर्दों का फिर से ज़िन्दा कर लिया जाना, पहले के पैग़म्बरों के चमत्कारों को खण्डित कर देता मगर अन्तर यही है कि ऊपर लिखी तमाम बातें ऐसे कारणों से प्राप्त की गयी हैं, जो समझ में आने वाली हैं और जिसके पास वह कारण उपलब्ध हो जायें उसके बस में है और पैग़म्बरों के चमत्कार आलों और दवाओं के ज़रिये अंजाम नहीं पाते थे, इसीलिये वह आज भी चमत्कार हैं।

इसी तरह आज की बहुत सी मान्यताएँ जो प्रयोगशालाओं (Laboratory) में जाँच पड़ताल के बाद दूरबीनों से देख के मुद्दतों के शोध अनुसन्धानों द्वारा प्राप्त की गयी हैं और इतनी आम हो गयी हैं कि बच्चे भी जानते हैं लेकिन यही बातें कुछ सदियों पहले इन्सान की पहुँच से बाहर और विचार से परे थीं आज से चौदह सौ

साल पहले कोई ऐसा व्यक्ति जिसका पालन पोषण घोर अज्ञान के युग में हुवा हो, जिसने किसी से अक्षर भी न सीखे हों, इन सच्चाईयों का अनावरण (इन्किशाफ) जिन तक पहुँच सैकड़ों बरस के बाद भी न मालूम कितने विद्वानों और अनुसन्धानकर्ताओं के पसीना बहाने के नतीजे में हुई है तो क्या यह बात आदत और सामान्य नियम के विरूद्ध चमत्कार नहीं होगी। हम कुछ ऐसे ही शास्त्रीय चमत्कार नमूने के तौर पर पेश करते हैं।

1– क़ुर्आन और आकर्षण एक प्रतिकर्षण नियम (क़ानूने जाज़िबा व दाफ़िआ)

आज तो आम लोग भी जानते हैं कि इस लम्बे चौड़े वातावरण में अरबों सौरमण्डल और बहुत सी आकाश गंगाएँ और दूसरे खगोलीय पिण्ड (Celestial Boby) दो प्रकार की शक्तियों के सन्तुलन के आधार पर, नपी तुली चाल से अपनी–अपनी धुरियों पर अपने केन्द्रों के गिर्द चक्कर काट रहे हैं। एक आकर्षण शक्ति है जो केन्द्र में पायी जाती है और एक प्रतिकर्षण शक्ति है जो चक्कर काटने वाले अंशों में पायी जाती है। एक शक्ति ज़्यादा दूर भागने नहीं देती और दूसरी शक्ति एक दूसरे में विलीन हो जाने से बचाती है और आश्चर्यजनक बात यह है कि यही आकर्षण प्रतिकर्षण व्यवस्था (निज़ामे जज़्ब व दफ़अ्) अगर बड़ी से बड़ी आकाश गंगाओं (कहकशाओं) में पायी जाती है जिसके एक सितारे का प्रकाश दूसरे सितारे तक हज़ारों प्रकाश वर्ष (नूरी साल) में पहुँचता है तो छोटे से छोटे एटमी कणों में भी यही व्यवस्था कार्यरत है। मगर इन शक्तियों का अनावरण इस युग की बात है, चौदह सौ बरस पहले वाले और भी अरब के अज्ञान काल में पलने वाले, इसको क्या जानते। मगर क़ुर्आन मजीद ने कितने प्यारे ढंग से इस व्यवस्था की ओर इशारा किया है।

''अल्लाह ही वह है जिसने आसमानों को बलन्दियाँ प्रदान कीं, ऐसे स्तम्भों के बिना जो तुम्हें नज़र आ सके।''

''और आसमान बनाये ऐसे स्तम्भ के बिना जिनको तुम देख सको।''

मुलाहेज़ा फरमाइये इन दोनों आयतों में यह नहीं है कि आसमान अपनी बलन्दियों पर स्तम्भ बिना रुके हुए हैं बल्कि फ़रमाया यह जा रहा है कि ऐसे स्तम्भ नहीं है जो तुम्हें नज़र आ सकें। यह प्रतिबन्ध यह बताता है कि सुतून (स्तम्भ) है मगर ऐसे जो दिखें नहीं। इन आयतों में ''अम्द'' का शब्द आया है जिसके माने हैं, वह जिस पर भरोसा हो, जो संभाले हो। स्तम्भों को अम्द इसीलिये कहते हैं कि वह छतों को संभाले होते हैं। इसीलिये उन विद्युत तरंगों (बरक़ी लहरों) और वह आकर्षण–प्रतिकर्षण शक्ति जो तारों और आकाश गंगाओं को अपनी जगह रोके हुए है, न देखे जाने वाले स्तम्भ मानेंगे। हदीस ने मतलब को और ज़्यादा खोल दिया। अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) से रिवायत है–

''यह जो आसमानों में तारे हैं यह भी ज़मीन की तरह नगर हैं जो एक दूसरे से प्रकाश स्तम्भों द्वारा जुड़े हुए हैं''

(जारी)